SPECIMEN FORMAT FOR THESES OF MONTH

Faculty	:	School of Arts & Social Sciences
Department	:	Hindi
Branch/ Area:	:	Hindi Literature
Sub Subject Heading:	:	
Candidate's Name	:	Abhirami C J
Candidate's Address with email	:	Naipunyam Pulumthuruthy Kadakam P O Chirayinkeezhu, Trivandrum Kerala Email: abhirami97june@gmail.com
Title of the Thesis	:	HINDI FILMON MEIN CHITRIT QUEER KA JEEVAN SANGHARSH EVAM SAMASYAYEN: EK ADHYAYAN
(i) In Roman Script		-
(ii) In Roman Script		-
Nomenclature of Degree:	:	Ph.D.
Month & Year of Enrolment:	:	January, 2021
Month & Year of Registration:	:	January, 2021
Month &Year of Submission:	:	January 2025
Month &Year of Award	:	March 2025
Name of Supervisor	:	Dr. Shobhana Kokkadan
Designation of Supervisor	:	Professor & Head, Dean of Arts and Social Sciences
Centre/Department/School in which Research was conducted	:	Department of Hindi, School of Arts and Social Sciences

University's Name & Address : Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women, Coimbatore – 43.

Abstract within 300 words:

सिनेमा समाज के विचारों और बदलावों को प्रभावित करने वाला एक सशक्त माध्यम है। हिंदी सिनेमा में क्वीयर समुदाय का चित्रण समय के साथ बदला है, जो समाज की लैंगिक और यौनिक अल्पसंख्यकों के प्रति धारणा को प्रतिबिंबित करता है। यह शोध "हिंदी फिल्मों में क्वीयर प्रतिनिधित्व की चुनौतियाँ और संघर्षएक अध्ययन :" 19वीं सदी से 21वीं सदी तक हिंदी सिनेमा में क्वीयर पहचान के चित्रण का विश्लेषण करता है।

इस अध्ययन में 1971 से 2023 के बीच प्रदर्शित 33 हिंदी फिल्मों का चयन कर उनके कथानक, पात्रों और क्वीयर समुदाय की चुनौतियों को केंद्र में रखकर विश्लेषण किया गया है। यह शोध पहचान निर्माण, भेदभाव, कानूनी बाधाएँ, सामाजिक बहिष्कार और नकारात्मक चित्रण के मानसिक प्रभाव जैसे विषयों पर केंद्रित है। इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक और तुलनात्मक शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

हिंदी सिनेमा में पहले क्वीयर पात्रों को अक्सर हास्यात्मक, उपेक्षित या रूढ़िगत रूप में प्रस्तुत किया जाता था। लेकिन फायर, अलीगढ़, एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा और चंडीगढ़ करे आशिकी जैसी फिल्मों ने क्वीर समुदाय की कहानियों को संवेदनशीलता और वास्तविकता के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है।

शोध से यह स्पष्ट होता है कि भले ही धारा 377 के गैरअपराधीकरण जैसे कानूनी सुधारों ने - सिनेमा की कहानियों को प्रभावित किया हो, सामाजिक स्वीकार्यता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। यह अध्ययन समावेशी कहानियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जो क्वीयर अनुभवों को सामान्य रूप में प्रस्तुत करें बजाय उनके हाशिए पर डालने के।

यह शोध सिनेमा अध्ययन में क्वीयर विमर्श को समृद्ध करता है और मुख्यधारा के हिंदी सिनेमा में क्वीर पहचान के अधिक संवेदनशील एवं प्रगतिशील चित्रण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

Major objectives:

- हिन्दी फिल्मी दायरे में अस्मिता की तलाश : क्वीर के संदर्भ में ।
- समकालीन समाज में क्वीर वर्ग की त्रासदीयों को अवगत कराना ।
- हिंदी फिल्मों में चित्रित क्वीर के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक स्थितियों के आधार पर समाज के दृष्टिकोण में बदलाव लाना ।
- क्वीर समुदाय के विरुद्ध होनेवाली समस्याओं, संघर्षों, विसंगतियों, तनावों, व्यथाओं को तर्कसंगत के साथ उजागर करने का एक प्रयास ।
- जेंडर या सेक्स के आधार पर सामाज द्वारा हशियेकृत किए गए लोगों की समस्याओं के सभी पक्षों को सच्चाई के साथ उजागर करना ।

Methodology:

मैंने हिंदी सिनेमा में एल जी बी टी क्यु +पात्रों के चित्रण से संबंधित पूर्ववर्ती शोध, समीक्षाएँ और सामाजिककिया है। साथ ही सांस्कृतिक संदर्भों का गहन अध्ययन-, फिल्म सिद्धांतों, मीडिया रिप्रेजेंटेशन सिद्धांतों और क्वीयर थ्योरी के दृष्टिकोण से साहित्यिक सामग्री का विश्लेषण किया है।

इस शोध में 1970 के दशक से लेकर 2023 तक की हिंदी फ़िल्मों में एल जी बी टी क्यु +प्रतिनिधित्व का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के लिए विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें चयनित फ़िल्मों में LGBTQ+ पात्रों की भूमिकाओं, संवादों, व्यवहारों, एवं समाज में उनकी स्वीकृति का गहन अध्ययन किया गया।

इस शोध के तहत निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया गया:

- हिंदी फ़िल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन - संघर्ष एवं समस्याएँ - एल जी बी टी क्यु +पात्रों के सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक एवं कानूनी संघर्षों का विश्लेषण किया गया।

- प्रतिनिधित्व का ऐतिहासिक विकास - 1970 से 2023 तक के विभिन्न दशकों में एल जी बी टी क्यु +पात्रों के चित्रण में आए बदलावों को समझने का प्रयास किया गया।
- स्टीरियोटाइप एवं पूर्वाग्रह - फ़िल्मों में एल जी बी टी क्यु +समुदाय को हास्यास्पद, नकारात्मक, या दयनीय रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया।
- मेरे अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, मैंने हिंदी सिनेमा में एल जी बी टी क्यु +प्रतिनिधित्व के वर्तमान स्वरूप का मूल्यांकन किया है। साथ ही, सामाजिक स्वीकृति और संवेदनशीलता को बढ़ाने हेतु संभावित सुझाव एवं समाधान प्रस्तुत किए हैं।

इस अनुसंधान पद्धति के माध्यम से, मैंने हिंदी सिनेमा में क्वीयर समुदाय के चित्रण की प्रामाणिकता, सीमाएँ और विकास को गहराई से समझने का प्रयास किया है।

Findings:

- हिंदी सिनेमा में प्रारंभिक दौर में क्वीर पात्रों को हास्यप्रद या नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता था ।
- 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में एल जी बी टी क्यु + समुदाय को संवेदनशील दृष्टिकोण से चित्रित करने का प्रयास शुरू हुआ है ।
- फ़ायर (1996) और माई ब्रदर... निखिल (2005) जैसी फिल्मों ने समलैंगिकता पर खुलकर बात करने की राह दिखाई दी है ।
- एल जी बी टी क्यु + पात्रों का चित्रण आमतौर पर या तो पीड़ित के रूप में या ट्रैजिक किरदारों के रूप में हुआ, जिससे वास्तविकता का आंशिक प्रतिनिधित्व हुआ ।
- हिंदी सिनेमा में समलैंगिक पुरुषों की तुलना में समलैंगिक महिलाओं का चित्रण अपेक्षाकृत कम दिखाए गए है ।

- एल जी बी टी क्यु + सिनेमा ने परिवारों में संवाद की नई शुरुआत की है और माता-पिता को अपने क्वीर बच्चों को समझने में मदद की है ।
- फिल्मों के माध्यम से युवाओं को अपनी पहचान को लेकर अधिक आत्मविश्वास और स्वीकृति मिलने लगी है ।
- समलैंगिक प्रेम कहानियों को अब ट्रैजिक एंडिंग की बजाय सुखद अंत देने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे सकारात्मक प्रतिनिधित्व संभव हुआ है ।
- एल जी बी टी क्यु + पात्रों के संवाद और प्रस्तुति में प्रामाणिकता बढ़ी है, जिससे समाज में उन्हें लेकर समझ विकसित हुई है ।
- हिंदी सिनेमा में क्वीर समुदाय से संबंधित कहानियों में विविधता लाने की आवश्यकता बनी हुई है ।
- समलैंगिकता और ट्रांसजेंडर पहचान को लेकर जागरूकता बढ़ाने में सिनेमा की भूमिका को अकादमिक शोधों में भी स्वीकार किया गया है ।
- क्वीर किरदारों को अधिक मानवीय और जटिल बनाने के प्रयास से क्वीर समुदाय की वास्तविकता को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।
- हिंदी फिल्मों में एल जी बी टी क्यु + समुदाय का चित्रण अभी भी पश्चिमी सिनेमा की तुलना में सीमित और रूढ़िवादी है ।
- हिंदी सिनेमा ने एल जी बी टी क्यु + समुदाय को दृश्यता प्रदान की है, लेकिन सामाजिक स्वीकृति को और बढ़ाने के लिए निरंतर सुधार की आवश्यकता बनी हुई है ।

Examiners

Internal Examiner: Dr. Jayalakshmi
Associate Professor & HoD
Department of Languages,
School of Social Sciences & Laungages
VIT, Vellore-632014

External Examiner: Dr. V K Subramanian
Department of Hindi
University of Calicut
CU Camous (P O)
Malappuram
Kerala 673635